ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

'वैश्विक हिंदी साहित्य एवं प्रवासी कहानी लेखन'

शबनम तब्बसुम (शोधार्थी)
हिंदी विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़ (उ०प्र०)
मोबा० नं० 9412444574, 9456241777
E-mail : shahalam_captain@yahoo.com
shabnamtabssum1980@gmail.com

शोध सार

विश्व हिंदी साहित्य में आज प्रवासी कथा साहित्य एक स्वीकृत एवं लोकप्रिय अवधारणा बन गई है। प्रवासी कथा साहित्य वर्तमान में एक विमर्श का प्रतीक बन गया है, जैसे–हिंदी में दलित विमर्श, स्त्री–विमर्श आदि सर्वमान्य रूप स्वीकृत है। 'प्रवासी' शब्द से एक आकर्षण तथा उन्मुक्ता का भाव उत्पन्न होता है कि प्रवासी देशों में भारतीय कैसे जीवन व्यतीत कर रहे हैं ? अन्य गद्यों के अपेक्षा प्रवासी कहानियाँ प्रवासी जीवन को व्यक्त करने में सशक्त भूमिका निभा रही है।

मुख्यतः हिंदी का प्रवासी कथा साहित्य, वास्तविक अर्थ में वैश्विक रूपरूप प्रदान करता है। हिंदी में प्रवासी कहानियाँ एक स्वतंत्र सत्ता के रूप में उभरकर सामने आया है। आज हिंदी विश्व में बोली जाने वाली दूसरी बड़ी भाषा बन गई है। हिंदी के प्रचार–प्रसार, संरक्षित एवं सवंर्द्धित करने में प्रवासी कथाकारों का महत्त्वपूर्ण योगदान हैं। वर्तमान में मॉरिशस, फिज़ी, सूरीनाम, त्रिनिडाड, अमेरिका, इंग्लैण्ड, आस्ट्रेलिया, नीदरलैंड, नार्वे, जापान, डेनमार्क आदि देशों के कहानीकारों ने अपने कहानियों के माध्यम से हिंदी को वैश्विक स्तर तक पहुँचा दिया है। दिव्या माथुर की कहानी 'संदेह', 'सूदर्शन प्रियदर्शनी की कहानी 'क्वारी बहू', 'सुधा ओम ढींगरा की', 'बेघर सच', नीलम मलकानियां की 'पिंजरा', अभिमन्यु अनत की 'खामोशी के चीत्कार' और 'एक खाली समंदर', रेखा राजवंशी की 'श्यामल जीजी', जकीया जुबैरी की 'मारिया' तथा महेन्द्र देवसरे की 'लकीर' आदि महत्त्वपूर्ण कहानियां लिखी गई हैं। आजकल प्रवासी कथाकारों को मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। कहानी के क्षेत्र में प्रवासी हिंदी लेखकों में व्यापकता एवं संवेदनाओं का विस्तार है।

निष्कर्षतः देखा जाय तो वर्तमान में प्रवासी कहानियां हिंदी को वैश्विक रूप प्रदान कर रही हैं। हिंदी की प्रवासी कहानियां भारतेत्तर देशों को भारत से जोड़ने में एक सेतु का कार्य किया है। यह सेतु विश्वव्यापी हिंदी साहित्यिक समाज का निर्माण किया है। विश्व के अनेक देश हैं, जहाँ पर हिंदी किसी न किसी रूप में विद्यमान है। अतः हिंदी केवल भारत की ही नहीं, बल्कि उसके जहां और भी हैं।

की वर्ड: प्रवासी, साहित्य, लेखक, कथा साहित्य,

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

शोध विस्तार

आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास में हिंदी प्रवासी कथा साहित्य की उपस्थिति उसका विवेचन और विश्लेषण एवं उसके स्वतंत्र अस्तित्व ने एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी प्रवासी कथा साहित्य हिंदी लेखन को व्यापक बनाया है तथा उसे वैश्विक रूप प्रदान किया है। प्रवासी कथा साहित्य हिंदी साहित्य का ही एक अंग है। आज विदेश में रहने वाले सभी हिंदी साहित्यकारों की रचनाओं को प्रवासी साहित्य कहा जाने लगा है। कोई व्यक्ति अगर विदेशों में जाकर बस जाता है और वहां रहकर लेखनकार्य करता है तो आलोचक उन्हें प्रवासी साहित्यकार कहते हैं।

विदेशों में साहित्य–सृजन विस्मित करता है। देश से दूर रहकर भी अपने वतन की सोंधी महक से अपनी भावनाओं में ओत–प्रोत कर रचना करते हैं। अपनी मूल जड़ों से दूर होने पर व्यक्ति विचलित हो जाता है। उसके पीछे छूटा घर–परिवार, सामाजिक परिवेश, जीवन–पद्धति सभी उसे उद्वेलित करते रहते हैं, जिसे वे अपनी रचनाओं में सृजित करते हैं। प्रवासी कथाकारों की जो भी रचनाएँ आती हैं, उनमें भारतीय सोच और भारतीय मानसिकता साफ दिखाई पड़ता है। अपने देश के अतीत की स्मृति उनके पास अब भी सुरक्षित है। ''हिन्दी प्रवासी साहित्य हिंदी के विराट संसार का अंग है। उसने अपनी विशिष्ट संवेदना, दृष्टिकोण, परिस्थिति और सृजन–प्रक्रिया के कारण प्रवासी हिंदी साहित्य को एक मौलिक रूप प्रदान करके हिंदी संसार में अपना योगदान दिया है।''[1]

भारत में रचे जाने वाले हिंदी कथा साहित्य के अपेक्षा प्रवासी कथा साहित्य के लेखन में काफी कठिनाइयां आती हैं, क्योंकि प्रवासी कथा साहित्य की संवेदना, परिवेश, सरोकार एवं परिस्थितियां एकदम भिन्न हैं, फिर भी वह हिंदी साहित्य को वैश्विक बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

हिंदी में प्रवासी साहित्य वर्तमान युग में एक साहित्यिक विमर्श बन चुका है। भूमंडलीकरण तथा तकनीकी विकास के कारण प्रवासी कथा साहित्य उस नए युग में नवीन अवधारणाओं को सम्मिलित कर लिया है, जो राजनीति, अर्थ, समाज, उद्योग, संस्कृति,

कूटनीति आदि सभी क्षेत्रों को प्रभावित कर रहा है। परन्तु इसका आरम्भ प्रेमचंद की कहानियां 'यह मेरी मातृभूमि' (1908) और 'शूद्रा' (1920) से ही हो गया था। जिसमें अमेरिका से लौटे एक भारतीय प्रवासी तथा मॉरिशस ले जाए गए भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की कहानी है। बनारसी दास चतुर्वेदी ने 1926 में 'चाँद' पत्रिका के प्रवासी अंक में 21 वर्ष से फीज़ी में रह रहे एक भारतीय के अनुभवों को 'फीजी द्वीप में मेरे इक्कीस वर्ष' शीर्षक कहानी में शब्दबद्ध किया है। प्रवासी कथा साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान अभिन्यू अनत की है, जिसने अपनी रचनाओं में उपनिवेशवादियों के शोषण चक्र को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। इन्हें 'मॉरीशस का प्रेमचंद' भी कहा जाता है। पूरे विश्व में 'विश्व हिंदी सम्मेलन' मनाया जाता है। विश्व हिंदी सम्मेलन में हिंदी को जीवंत बनाए रखने में प्रवासी साहित्यकार महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। विभिन्न देशों से आए सभी प्रवासी भारतीय सम्मेलन में भाग लेते हैं तथा हिंदी को विभिन्न क्षेत्रों में फैलाने के उपाय तथा योजनाएँ ढूंढ़ी जाती हैं। इस प्रकार विश्व हिंदी सम्मेलन भी हिंदी को विश्व में जीवित रखने के लिए सहयोग करता है। अभी हाल ही में 10वाँ विश्वहिंदी सम्मेलन, 2015 को भोपाल, भारत में सम्पन्न हुआ है। जिसमें सैकड़ों हिंदी प्रेमियों, जिनकी रचनाएँ देश–विदेश में रची जा रही हैं, उन सबकी एक झाँकी प्रस्तुत की गई।

आजकल प्रवासी कथा साहित्य की पहचान दो रूपों में होती है–एक प्रवासी भारतीयों का साहित्य और दूसरा भारतवंशियों का साहित्य। भारतवंशियों के हिंदी साहित्य में मॉरीशस, फिज़ी, सूरीनाम, त्रिनिडाड आदि देश है, जिनका जन्म इस देश में हुआ और ये लेखक भारतीय संस्कृति से अपने आपको जोड़े हुए हैं। प्रवासी भारतीय साहित्य में इंगलैंड, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, नीदरलैण्ड, नार्वे, डेनमार्क आदि देश हैं, जहाँ भारतीय बेहतर जीवन एवं शिक्षा के लिए विदेशों में गए और हिंदी प्रेम के कारण उसे अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया।

यद्यपि प्रवासी कहानीकारों में सबसे बड़े लेखक अभिमन्यू अनत हैं। ''मॉरीशस में हिंदी की पहली कहानी के रूप में सूर्यप्रसाद मंगर भगत की कहानी 'विनाश' (1934), वली मुहम्मद की कहानी 'अनबोलती चिड़ियाँ', पं. तारकेश्वरनाथ चतुर्वेदी की 'इन्दो' (दि० 1933) तथा पं. जयप्रसाद शर्मा की कहानी 'तारा' (1934) का उल्लेख मिला जाता है।''[2]

निर्मल वर्मा की कहानियाँ 'वे दिन', 'लंदन की एक रात', 'चीड़ों पर चाँदनी' जैसी रचनाओं में समाया हुआ अनुभव एवं अभिव्यक्ति, युरोप जाए बिना सम्भव नहीं था। उषा प्रियंवदा अमेरिका में रहकर भी वहाँ के अप्रवासी जीवन पर कहानियाँ लिखकर भेजती रहती हैं। ''उषा प्रियंवदा की कहानी 'पुनरावृति' एक दारुण पीड़ा से गुजरते हुए अपने अस्तित्व की जड़ें हिलाने वाला, जो शब्दों में अंकित किया है, उसे पढ़ने के बाद यादों से निकाल पाना आसान नहीं है।''[3]

अभिमन्यू अनत की कहानी 'जहर और दवा' की नायिका सोफिया पिता–बेटा दोनों के साथ इश्क लड़ा रही है। कनाडा के रचनाकार स्नेह ठाकुर की कहानी 'प्रथम डेट', जिसमें फ्लर्ट स्वभाव के कारण अनिल अपनी पत्नी निधि को छोड़कर अपने से आधी उम्र की लड़की के साथ रहने लगता है। ऐसे में निधि के जीवन में पियूष नामक व्यक्ति आता है। उसके साथ 'डेट' पर जाने में, असमंजस की स्थितियों में बेटी उसका साथ देती है।

जहाँ एक भारतीय साहित्य में स्त्री का जो संघर्ष, तड़प और स्त्री के अंतर्विरोध दिखाई पड़ता है, उस तरह की तड़प प्रवासी कथा साहित्य में दिखाई नहीं पड़ता। फिर भी आजकल प्रवासी कथाकार स्त्री जीवन को उजागर करने का प्रयत्न कर रहे हैं। विदेशों में 80 प्रतिशत महिलाएँ नौकरीपेशा हैं, वहाँ की नौकरियों में नस्लवाद दिखाई पड़ता है। ''विदेशों में बच्चों को, बेरोजगारों को और सिंगल मदर को, वहाँ की सरकार के तरफ से भत्ते मिलते हैं। ताकि कोई भूखा न रहे।''[4] यानि मूलभूत जरूरतें पूरी हो जाती हैं, इस कारण व्यक्ति निकम्मा न हो जाए। इस तरफ कहानीकारों को ध्यान देना आवश्यक है।

प्रवासी कहानीकार ज्यादातर स्त्री–पुरुष के संबंधों को ही उजागर करते नजर आते हैं। ब्रिटेन की लेखिका उषा राज सक्सेना की कहानी 'वह रात' की नायिका बच्चों के पालन–पोषण के लिए वेश्यावृति करती है। प्रश्न यह उठता है कि उन्हें विदेशों में मिलने वाले भत्तों की जानकारी नहीं है या वेश्यावृति अपनी मौज मस्ती के लिए करती है। अचला शर्मा की कहानी 'चौथी ऋतु' वृद्धों की अकेलेपन की कहानी है, जो अंग्रेजी परिवेश, वहाँ के रहन–सहन में कैदी के तरह जीवन व्यतीत करती है। ब्रिटेन की लेखिका दिव्या माथुर की चर्चित कहानी 'फिर कभी सही' जिसमें विवाहेत्तर संबंध में उलझी नेहा की कहानी है। वह अपने जीवन में स्थायित्व पाने के लिए क्यों निर्णय नहीं ले पाती है?

कहानी के क्षेत्र में ब्रिटेन के हिंदी लेखकों में व्यापकता एवं संवेदनशीलता का विस्तार है। प्रवासी जीवन के जानने के लिए कहानियाँ ही सबसे अधिक प्रामाणिक सिद्ध होती है। ''हिंदी का प्रवासी साहित्य भारतेत्तर देशों को भारत से जोड़ने का एक सेतु बनता है, जिसके मूल में भारतवंशियों का स्वदेश प्रेम, भाषा प्रेम के साथ उनकी आत्मीय संलग्नता, सहभागिता एवं सहयोग अमूट रूप में सम्बद्ध रहता है।''[5]

अमेरिका की लेखिका सुदर्शन प्रियदर्शनी की कहानी प्रवासी कथा साहित्य में महत्त्वपूर्ण है। उनकी कहानियां 'अखबार वाला', 'क्वाँरी बहू', 'उत्तरायण' और 'सावित्री नं. 3' अन्यन्त मर्मस्पर्शी है। 'सावित्री नं. 3' भारतीय पत्नी की कहानी है जो ताउम्र पति से धोखा खाने के बाद भी उसकी पूजा करती है। 'क्वारी बहू' में उदयशंकर नामक व्यक्ति की कहानी है, जो विदेशी नागरिकता प्राप्त करने के लिए विदेशी मेम मिस स्टेफनी से शादी कर लेता है। माँ–बाप को रखने पर आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है, इसलिए माँ–बाप को अपने पास बुला लेता है और जब काम निकल जाता है तो उन्हें वापस भारत भेज देता है। उधर स्टेफनी भी मतलब निकल जाने के बाद सारी संपति लेकर, बच्चों एवं उदयशंकर को छोड़कर चली जाती है और तलाक के लिए नोटिस भेज देती है। अंततः इन सबके बावजूद माँ–बाप गाँव में बेटे के लिए क्वाँरी बहू ढूंढ रहे हैं। यह कहानी विदेश में जाने वाले लगभग हर भारतीय की कहानी लगती है।

यू.एस.ए. की कहानीकार सुधा ओम ढींगरा की कहानी 'क्षितिज से परे' में नायिका सारंगी 40 साल पति के अत्याचार सहने के बाद कहती है–''मेरी प्राथमिकताएँ बदल गई हैं, भावनात्मक स्तर पर मैं उनसे बहुत दूर निकल चुकी हूँ... क्षितिज से परे... मैं सचमुच सुलभ से रिलेट नहीं कर सकती।''[6] जकिया जुबैरी की कहानी 'मारिया' प्रवासी समाज की सच्ची कहानी है। इसमें माँ की अन्तर्द्वन्द्व की कहानी है, जिसमें एक बेटी अपनी माँ के प्रेमी के साथ ही शेयर कर रही है। महेन्द्र दवेसर 'दीपक' की कहानी 'एक लड़की और बीस पाउंड' में समीना नाम की लड़की की कहानी है, जो लंदन में रहती है। जिसकी जबरन शादी पाकिस्तान के 50 साल के जमींदार के साथ की जा रही थी। वह कहती है–''हाँ मैं घर से भागकर आयी हूँ। मर जाऊँगी पर अपना पता–वता कुछ नहीं बताऊँगी.... पचास साल के बूढ़े से मेरी शादी कर रहे हैं। वहां भी मरना था, अब यहां भी मर रही हूँ....

ओके?''[7] विश्व का कोई भी देश हो, हरजगह स्त्रियों की हालत लगभग एक जैसी ही रही है।

डॉ. अंजना संधीर के सम्पादन में 'प्रवासी आवाज' का संकलन हो रहा है, जिसमें अमेरिका के कहानीकारों की प्रवासी कहानियां छपती हैं। इस पुस्तक में उषा प्रियंवदा, सोमावीरा, उमेश अग्निहोत्री, श्री अमरेन्द्र, सुषमा वेदी, इलाप्रसाद आदि की कहानियां हैं। अमरेन्द्र की कहानी 'गांधी खड़ा बजार में, रोजमर्रा की ज़िंदगी की तथा भूदेव शर्मा की कहानी 'प्रवासी की माँ' में स्त्रियों के जीवन की उलझनों को सुलझाने का प्रयास है। ज्यादातर देखा गया है कि विदेशों की स्त्रियां पति के साथ ज्यादा खुश न रहकर अपने ब्याय फ्रेंड के साथ ज्यादा खुश रहती है। विडंबना यह है कि यह प्रवृत्ति आजकल भारत में भी प्रवेश करता जा रहा है।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि ''प्रवासी लेखक अनेक बार स्वदेश–परदेश के द्वंद में जीता है और नई–नई अनुभूतियों, तनावों और विसंगतियों से गुजरता है, जब वह रचना करने बैठता है तो इन नए जीवन का भावबोध, नया दृष्टिकोण तथा नए जीवन–मूल्यों की रचना होती है।''[8] इसलिए हिंदी की प्रवासी कहानियां नए स्वप्न, नए जीवन संघर्ष और नए सरोकारों का साहित्य कहा जा सकता है। वर्तमान में प्रवासी कथाकारों को मूलधारा से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

निष्कर्षतः हिंदी की प्रवासी कहानियाँ हिंदी साहित्य को नई दिशा दी है। प्रवासी कहानियां हिंदी के प्रचार–प्रसार में वैश्विक स्तर पर महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। आवश्यकता इस बात की है कि प्रवासी कथा–साहित्य की समृद्धि के लिए निरपेक्ष भाव से अध्ययन किया जाय और इसे हिंदी साहित्य के इतिहास में समुचित स्थान मिले।

संदर्भ :

1. 'प्रवासी साहित्य : जोहान्सवर्ग से आगे'; डा. कमल किशोर गोयनका (सं0), संस्करण 2015, प्रकाशक विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, साउथ ब्लाक, नई दिल्ली, पृ0 17–18

2. मॉरीशस की पहली हस्तलिखित पत्रिका 'दुर्गा', 'हिन्दू–हिंदी और मॉरीशसीयता का शंखनाद; कमल किशोर गोयनका, हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरीशस, 2001, पृ0 26

3. 'प्रवासी आवाज... एक अनूठा संकलन', देवी नागरानी; वर्तमान साहित्य पत्रिका, जून 2009, पृ0 73

4. 'प्रवासी साहित्य में स्त्री जीवन'; मधु अरोरा, वर्तमान साहित्य पत्रिका, अगस्त–2011, पृ0 63

5. 'हिंदी का प्रवासी साहित्य : दशा और दिशा', डा. कमल किशोर गोयनका, विश्व हिंदी पत्रिका, 2014, पृ0 80

6. 'क्षितिज से परे'; सुधा ओम ढींगरा, विश्व हिंदी पत्रिका–2014, प्रवासी साहित्य और चुनौतियां, पृ0 90 से उद्धृत

7. 'एक लड़की और बीस पाउण्ड'; महेन्द्र दवेसर दीपक, वर्तमान साहित्य, जनवरी–2009, पृ0 4

8. 'हिंदी का प्रवासी साहित्य : दशा और दिशा'; डा. कमल किशोर गोयनका, विश्व हिंदी पत्रिका–2014, पृ0 80